

पाठ - 10 भारति, जय, विजयकरे

भाग 1: मंगलाचरण और भारतमाता का स्वरूप

1- भारति, जय, विजयकरे ! कनक-शस्य-कमलधरे !

कठिन शब्दार्थ

- **भारति:** भारतमाता।
- **कनक:** सोना या सुनहरी।
- **शस्य:** फसल, खेती या धान्य।
- **कमलधरे:** हाथ में कमल धारण करने वाली।

व्याख्या: राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी साक्षात् ज्ञान और गौरव की प्रतिमूर्ति भारतमाता (भारती) का वंदन करते हुए कहते हैं कि हे भारतमाता! तुम्हारी सर्वत्र जय हो, तुम संपूर्ण विश्व में विजय प्राप्त करो। कवि भारतभूमि को एक सजीव देवी के रूप में देखते हुए संबोधित करते हैं कि तुम अपने हाथों में सोने जैसी मूल्यवान चमकीली फसलें और पवित्र कमल का पुष्प धारण करने वाली हो। यह पंक्ति भारत की महान कृषि-परंपरा, प्राकृतिक समृद्धि और श्रम के अनूठे सौंदर्य को रेखांकित करती है।

भाग 2: भौगोलिक विस्तार और सागर द्वारा चरण-वंदन

2- लंका पदतल शतदल, गर्जितोर्मि सागर-जल धोता शुचि चरण युगल स्तव कर बहु-अर्थ-भरे !

कठिन शब्दार्थ

- **पदतल:** पैरों के नीचे।
- **शतदल:** सौ पंखुड़ियों वाला कमल।
- **गर्जितोर्मि:** गर्जना करती हुई ऊँची समुद्री तरंगें या लहरें। (गर्जित + ऊर्मि)
- **शुचि:** पवित्र, स्वच्छ या निर्मल।
- **चरण युगल:** दोनों पैर (जोड़ी)।
- **स्तव:** स्तुति, प्रशंसा या वंदना।
- **बहु-अर्थ-भरे:** अनेक गहरे और कल्याणकारी अर्थों से युक्त।

व्याख्या: इस अंश में महाकवि निराला जी ने भारत की अनूठी भौगोलिक अवस्थिति का एक अत्यंत जीवंत और भव्य चित्रात्मक परिदृश्य प्रस्तुत किया है। कवि कहते हैं कि भारतमाता के पैरों के नीचे स्थित श्रीलंका द्वीप ऐसा प्रतीत होता है मानो उनके चरणों में अर्पित कोई सुंदर कमल का पुष्प हो। भारत को घेरे हुए विशाल महासागर का जल अपनी गर्जना करती हुई ऊँची-ऊँची लहरों (गर्जितोर्मि) के साथ निरंतर भारतमाता के दोनों पवित्र और निर्मल चरणों को धो रहा है। सागर की लहरों से उठने वाली वह भयानक ध्वनि ऐसी प्रतीत होती है मानो वह अपनी मूक भाषा में भारतमाता के गौरव के अनेक गहरे अर्थों से भरे हुए स्तुति-गान (स्तव) गा रही हो।

भाग 3: प्रकृति के वस्त्राभूषण और सांस्कृतिक उद्घोष

**3- तरु-तृण-वन-लता वसन,
अंचल में खचित सुमन;
गंगा ज्योतिर्जल-कण
धवल धार हार गले।**

कठिन शब्दार्थ

- तरु-तृण: वृक्ष और छोटे तिनके या घास।
- वसन: वस्त्र या आवरण।
- खचित: जड़ा हुआ या अंकित।
- सुमन: सुंदर पुष्प या फूल।
- ज्योतिर्जल-कण: प्रकाशमयी उज्ज्वल जल की बूंदें।
- धवल धार: सफ़ेद, स्वच्छ और निर्मल धारा।

व्याख्या: कवि भारत की प्रकृति का मानवीकरण करते हुए कहते हैं कि भारतभूमि पर फैले हुए अनगिनत विशाल वृक्ष, हरी घास, सघन वन और बेलें (तरु-तृण-वन-लता) भारतमाता के सुंदर हरे वस्त्र (वसन) हैं। उनके इस विशाल आंचल में खिले हुए रंग-बिरंगे फूल ऐसे लगते हैं मानो वस्त्र पर सुंदर सितारे या आभूषण जड़े (खचित) गए हों। पहाड़ों से बहने वाली पवित्र गंगा नदी की चमकीली प्रकाशमयी बूंदों (ज्योतिर्जल-कण) से युक्त वह श्वेत और निर्मल धारा भारतमाता के गले में सुशोभित होने वाले एक दिव्य सफ़ेद हार के समान दिखाई देती है।

**4- मुकुट शुभ्र हिम-तुषार,
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख-शतरव-मुखरे!**

कठिन शब्दार्थ

- शुभ्र: उज्ज्वल या चमकीला।
- हिम-तुषार: शीतल बर्फ के कण।
- प्रणव: पवित्र ओंकार ध्वनि या ईश्वर।
- शतरव-मुखरे: सैकड़ों ध्वनियों और विचारों से गूँजता हुआ।

व्याख्या: उत्तर दिशा में स्थित बर्फ से ढका हुआ विशाल हिमालय पर्वत भारतमाता के मस्तक पर सजे हुए एक उज्ज्वल और चमकीले मुकुट के समान भव्य प्रतीत होता है। भारत केवल एक मिट्टी का भूखंड नहीं बल्कि एक जाग्रत चेतन सत्ता है, जिसके प्राणों में पवित्र 'ओंकार' (प्रणव) का दिव्य नाद बसता है। इसी आध्यात्मिक चेतना के कारण भारतमाता की सभी दिशाएँ उदार विचारों से गूँज रही हैं और यहाँ का जनजीवन सैकड़ों मुखों से निकलने वाली विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और कल्याणकारी विचारों की ध्वनियों (शतरव) से निरंतर गूँजता और समृद्ध होता रहता है।